नहीं मर सकता गांधीवाद

सामयिक

प्रभात कुमार राय

महात्मा गांधी वारिसों ने उनके विचारों को ठोस व्यवहार के धरातल पर रौंदा। एक राजनीतिक तंजीम ने गांधी को जीते जी नकारा, किंतु सियासी फायदा लेने के अपने सम्मेलनों और दफ्तरों में उनके फोटो टांग लिए। इसी राजनीतिक दल ने गांधी बाबा के रघुपति राघव राजा राम का मंदिर बनाने के लिए देश भर में सांप्रदायिक तांडव कराया

एक खबर आई कि सेवाग्राम वर्धा आश्रम से महात्मा गांधी का चश्मा गुम हो गया। ये चश्मा नवंबर महीने से गायब रहा, किंतु अनेक माह तक सेवाग्राम वर्धा आश्रम के चैयरपरसन एमएम गडकरी ने गांधी बाबा के चश्मा गुम हो जाने की घटना को गुप्त बनाए रखा। चश्मा गुम हो जाने की घटना से बहुत पहले से ही गांधी बाबा के सभी सिद्धांत, सभी उसूल, सभी शिक्षाएं और सभी हिदायतें महात्मा गांधी के नाम पर राजनीति करने वाले राजनेताओं की कार्यनीति बाकायदा गायब हो चुकी थी। गांधी बाबा का सिर्फ नाम और उनका चित्र ही इन राजनेताओं के जीवन में प्रतीकात्मक तौर पर शेष रह गया, जैसे संग्रहालय में उनकी लाठी, कलम, चश्मा, घड़ी और लंगोटी आदि सामान शेष बचा रह गया। महात्मा गांधी का नाम अपने प्रणेता के तौर पर लेने वाले सत्तानशीन राजनेता भारत को विश्व पटल पर एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में पेश किया करते हैं। अपने इस दावे को साबित करने के लिए दो तथ्य प्रस्तुत करते हैं, पहला लैटिन अमेरिकन और अफ्रीकन मुल्कों के मुकाबले कहीं अधिक भारत की आर्थिक विकास दर आठ और नौ प्रतिशत के मध्य बनी हुई है और दूसरा यह कि पाकिस्तान और चीन के विपरीत भारत ने सफलतापूर्वक पंद्रह आम चुनाव आयोजित करा लिए। अतः दुनिया के नक्शे पर जोरदार आर्थिक प्रगति करने वाले कामयाब गणतंत्र के तौर पर भारत को तसलीम किया जा रहा है।

भारत की 45 करोड़ से अधिक संतानें दरिद्रता की सरहदी रेखा से नीचे अपना जीवन व्यतीत करने के लिए विवश रही हैं। भारत की आर्थिक विकास दर आठ और नौ प्रतिशत कायम रहने के बावजूद देश के 15 करोड़ युवा बेरोजगार क्यों बने हुए हैं? महात्मा गांधी ने 1947 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरु को सुझाव पेश किया था कि आर्थिक योजना बनाते हुए हमेशा ही आखिरी दरिद्र इंसान का चेहरा अपनी आंखों के समक्ष रखना चाहिए। महात्मा गांधी की इस शानदार हिदायत का भारतीय प्रधानमंत्री की कयादत में काम अंजाम देने वाले भारतीय योजना आयोग ने किस तरह से परिपालन किया, यह तथ्य तो समस्त राष्ट्र के समक्ष आ ही चुका है। विगत 64 वर्षों के दौरान जिस तरह से आर्थिक योजनाएं कार्यान्वित की गईं, उनके परिणामस्वरुप राष्ट्र ने बहुत तरक्की की, किंतु इस तमाम शानदार तरक्की का संपूर्ण फायदा पहले से ही संपन्न और शक्तिशाली वर्ग को ही हासिल हुआ। 1991 के बाद कथित मनमोहना नई आर्थिक नीति के लागू होने के पश्चात देश के दो लाख से अधिक किसान आत्मघात कर चुके हैं और यह आंकड़ा प्रतिवर्ष बढ़ ही रहा है।

गांधी बाबा के विचारों और विरासत को वर्तमान संदर्भ में निरुपित करते हुए प्रख्यात कवि पं0 भरत व्यास ने काव्यात्मक रुप प्रदान किया-

काला धन और काला व्यापार रिश्वत का है गरम बाजार
देख ले बापू तू खुद ही अब तेरे टूट गया चरखे का तार
तेरी हिंदी के पाँवों में अंग्रेजी ने डाल दी डोर
तेरी लकडी ठगों ने ठग ली तेरी बकरी ले गए चोर

महात्मा गांधी का वहशियाना भौतिक कत्ल तो नाथूराम गोडसे ने किया था, किंतु उनका नैतिक कत्ल उन सियासतदानों और कथित समाजसेवकों ने अंजाम दिया, जिन्होंने गांधी का पवित्र नाम रोज रोज लेते हुए, गांधी के दरिद्रनारायण जनमानस की अकूत राष्ट्रीय संपदा को लूट कर काले धन के जखीरे के तौर पर विदेशी बैंकों में अपने खातों में बाकायदा जमा कर लिया। महात्मा गांधी की नैतिक शक्ति को उनकी मौत के पश्चात समूचे विश्व ने स्वीकारा और सराहा, किंतु उनके अपने वारिसों ने उनके विचारों और उनकी तालीम को ठोस व्यवहार के धरातल पर पूर्णतः रौंदा और नकार दिया। एक राजनीतिक तंजीम, जिसने गांधी को उनके जीते जी नकारा, किंतु सियासी फायदा लेने के लिए बाद में अपने सम्मेलनों और दफ्तरों में उनके फोटो टांग लिए। इसी राजनीतिक दल ने गांधी बाबा के रघुपति राघव राजा राम का मंदिर बनाने के लिए देश भर में सांप्रदायिक तांडव कराया, जिसमें दस हजार से अधिक बेगुनाह नागरिक कत्ल हुए। गांधी का नाम जपने वाले आखिर किस राजनीतिक दल के राजनेताओं ने अपने आचरण में महात्मा गांधी के विचारों और उनकी नैतिक विरासत की धज्जियां नहीं बिखेरीं?

इस सबके बावजूद गांधीवाद की नैतिक ताकत कदाचित कभी कम न होगी। गांधीवाद से प्रेरित गांधी कैप धारण किए अन्ना हजारे नाम का एक शख्स फिर से समूचे अनैतिक भ्रष्ट तंत्र को चुनौती पेश कर रहा है। इससे पूर्व 1970 के दशक में गांधीवादी जयप्रकाश नारायण ने संपूर्णक्रांति का नारा बुलंद करके भ्रष्ट सत्ता प्रतिष्ठान को जबरदस्त चुनौती दी थी। इसके पश्चात विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 1987 में सत्तानशीन भ्रष्टाचारियों को ललकारा था, किंतु दुर्भाग्यवश भ्रष्टाचार विरोधी दोनों ही मुहिम ऐतिहासिक तौर पर नाकाम रही। गांधी बाबा अब मात्र किसी महान शख्स का नाम नहीं रहा गया है, वह तो एक जबरदस्त संघर्षशील सार्वभौमिक नैतिक विचार बन चुका है, जो राष्ट्र से भ्रष्टाचार, लूटमार, अनाचार, अत्याचार, व्याभिचार, शोषण, गैरबराबरी और दरिद्रता को खत्म करने के लिए सदैव जूझता रहेगा और दरिद्रनारायण जनमानस की अंतिम विजय होने तक लड़ता ही रहेगा। गांधी का शरीर कत्ल कर दिया, किंतु गांधी को कदापि मिटाया न जा सका और उनका चश्मा ही क्या, गांधी बाबा के संग्रहालय का सारा सामान भी गायब हो जाएगा, तो भी गांधी का क्या बिगड़ जाएगा?

नारों में हड़तालों में भारत के सब दुखियारों में
गांधी कदापि नहीं मरा अब जीवित है हत्यारों में
जब तक छूआछात रहेगी जब तक जातपात रहेगी
जातिवाद का कोढ़ रहेगा तब तक महात्मा नहीं मरेगा
जब तक सरमायादारी है जब तक जनता बेचारी है
मेहनतकश की लाचारी है जब तक सत्ता हत्यारी है
हत्यारी सत्ता से कौन लड़ेगा तब तक गांधी नहीं मरेगा।

(लेखक पूर्व प्रशासनिक अधिकारी हैं)

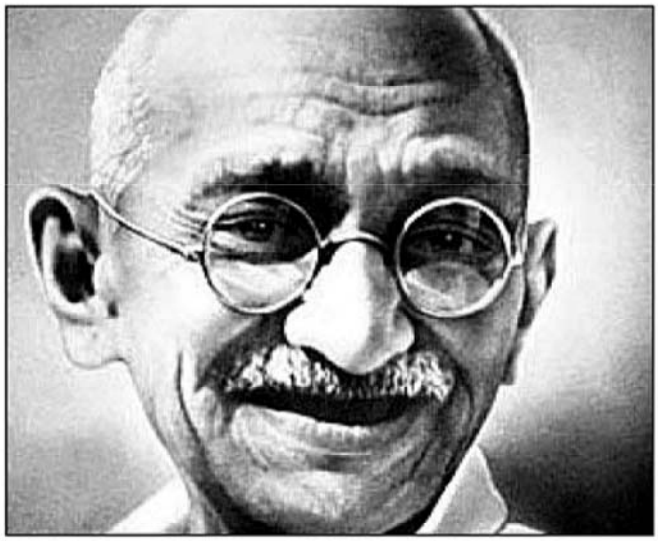

Reproduced by www.hobbyshobby.com with author's permission